हिन्दुस्तानी समाज की जल्द ख़बर लीजिये

मौलाना अली मियाँ (रह0)

पयामे इन्सानियत फ़ोरम
पोस्ट बॉक्स नं0 – 93, लखनऊ।

www.abulhasanalinadwi.org

दो शब्द

भारत वर्ष एक महान देश है इसकी भूमि में प्राचीन काल से आपसी प्रेम, सद्भाव का बहुत महत्व रहा है, इस महान देश की बिगड़ती स्थिति को देखते हुए इस समय मानवता के संदेश की नगर, गाँव तथा जन–जन तक पहुंचाने की नितांत आवश्यकता है।

यह मौलाना का एक ऐतिहासिक सम्बोधन है। हम देशवासियों के लिए इन्सानियत का पाठ है और हम सबको इनके विचार से लाभ उठाना चाहिए।

यह पुस्तक देश के विभिन्न क्षेत्रों में काफ़ी पढ़ी गई और लोगों ने इससे काफ़ी लाभ उठाया, पयामे इंसानियत फ़ोरम की ओर से हज़ारों की संख्या में प्रकाशित कर के वित्रित किया जा चुका है देश के विभिन्न क्षेत्रों से भी बड़ी संख्या में लोगों ने इसे प्रकाशित कर के जनमानस तक पहुँचाने का प्रयास किया है जिससे काफ़ी सफलता मिली। अब कम्प्यूटर कम्पोजिंग कर के पयामे इन्सानियत फ़ोरम द्वारा इस पुस्तक को पुनः प्रकाशित किया जा रहा है जिससे हम सभी भाइयों को प्रसन्नता होगी। देश में इन्सानियत का बोल बाला हो आपसी सौहार्द, सहानुभूति और देश के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो। यही हमारा उद्देश्य है, इस लक्ष्य को पाने के लिए आपका हमें सहयोग चाहिये, हमें पूर्ण विश्वास है कि आप से यह सहयोग अवश्य मिलेगा।

22-7-2003

www.abulhasanalinadwi.org

हिन्दुस्तानी समाज की जल्द ख़बर लीजिए

मानव जीवन के उतार–चढ़ाव और संसार के इतिहास पर जिन लोगों की नज़र है वह जानते हैं कि राष्ट्रीय और राजनीतिक ज़िन्दगी में समाज की हैसियत रीढ़ की हड्डी के समान होती है। शुद्ध आचरण और राजनीतिक सूझ–बूझ रखने वाले एक अच्छे समाज के द्वारा ही राज्य स्थापना होती है। वही उसको दृढ़ बनाता है, उन्नति देता है और उसकी रक्षा करता है। जब उस राज्य की रगें सूखने लगती हैं और उसके बुढ़ापे के चिन्ह ज़ाहिर होने लगते है तो वही उसकी रगों में नया और गर्म ख़ून पहुँचाता है। समय पर उसे ज़िम्मेदारी, जोशीले और काम के आदमी देता है। सचमुच एक सभ्य और सुव्यवस्थित समाज जो दृढ़ विश्वास, ऊँचे सिद्धान्त, सदाचरण, बलिदान और कर्तव्य–पालन के भाव रखता है। एक ऐसा सोता है, जिससे आज़ादी और तरक्की की

www.abulhasanalinadwi.org

नहरें फूट निकलती हैं और पूरे देश को हरा–भरा कर देती हैं। इसी तरह जिस समाज का आचरण गिर जाता है और जिसमें स्वार्थ–परता, चापलूसी, खुशामद, अत्याचार, धन का लालच और शक्ति का भय पैदा हो जाता है तो यूं समझिए कि जीवन का सोता सूख गया और उस मुल्क और उस क़ौम के दरख़्त को घुन लग गया। जब हुकूमतों का उलट–फेर हो या फ़ौजी ताक़त की अधिकता हो, देश की पैदावार में वृद्धि न हो या शिक्षा का आम प्रचार न हो, कोई चीज़ भी उस जाति (RACE) को तबाही से, और उस देश को बर्बादी से नहीं बचा सकती। जैसे जब किसी वृक्ष की जड़ें और रगें सूख जायें और वह भीतर से खोखला हो जाये तो ऊपर से पानी डालने से काम नहीं चलता।

संसार के इतिहास में इसके अनेक उदाहरण मौजूद हैं। रूमी राज्य का संसार में डंका बजा करता था। रूमी जाति ने जैसे सुयोग्य शासक और अनुभवी योद्धा पैदा किये वैसे शायद ही किसी जाति ने पैदा किये हों। मगर जब उसमें दुराचरण और भोग–विलास की बुराइयां पैदा हुई और अत्याचार, अन्याय और अनुचित पक्ष–पात का ज़हर फैल गया तो उसके भाग्य का चमकता हुआ सूरज डूब गया और उसे उसके बाहरी और भीतरी दुश्मनों नें धर पकड़ा। अब वह रूम जिसकी संसार भर में धाक

www.abulhasanalinadwi.org

जमी हुई थी, यूरोप की असभ्य जातियों के हमलों से कांपने लगा। दिन का चैन और रातों की नींद जाती रही। फिर छठी शताब्दी ईसवी में ईरानियों ने उसके पूर्वी भाग पर हमला करके उसकी इज्जत ख़ाक में मिला दी। नब्बे हज़ार लोगों को क़त्ल किया। उसके अधीन देशों पर क़ब्ज़ा कर लिया और उसकी राजधानी कुस्तुन्तुनिया को घेर लिया। फिर कुछ वर्षों के बाद ही जब रूमी कठिनाई के साथ थोड़ा संभल पाये थे कि अरब की मुट्ठी भर और नाम की सेना ने धावा बोल दिया। रूमी समाज नैतिक दृष्टि से इतना कमज़ोर और खोखला हो गया था कि हरकुल जैस अनुभवी सेनानायक और वीर शासक, जिसने अपनी योग्यता से ईरानी सेना को अपने देश से निकाल बाहर किया और ईरानी प्रदेशों में अपना झण्डा गाड़ दिया था, इस गिरते हुए रूमी समाज के पतन को रोक न सका और उसे अपना देश उन अरबों को सौंप देना पड़ा, जिनमें धर्म का जोश, शहीद होने की उमंग और सदाचारण की शक्ति थी।

यही ईरान में हुआ, जहाँ रात–दिन हुन बरसता था, जिसकी धन–सम्पत्ति और सैनिक–शक्ति की कोई सीमा न थी। मगर वर्षों से दुराचरण और नैतिक पतन का कीड़ा लग चुका था जो भीतर ही भीतर ईरानी समाज को खोचाला कर रहा था। नतीजा यह हुआ

www.abulhasanalinadwi.org

यज़्दगर्द जैसा दृढ़ स्वभाव सम्राट और रूसतम जैसा अनुभवी सेनाध्यक्ष भी इस देश को बचा न सका और अरबों ने दोनों पूर्वी और पश्चिमी साम्राज्यों को अपने हाथ में ले लिया।

बग़दाद की अब्बासी ख़िलाफ़त की दुनिया में धाक जमी हुई थी। ख्वार्जम शाह का राज्य अपने ज़माने में संसार का सबसे बड़ा राज्य था। मगर मुसलमानों के समाज में भीतरी ख़राबी और अख़्लाक़ी कमज़ोरी पैदा हो चुकी थी। नतीजा यह निकला कि तातारियों की बाढ़ किसी के रोके न रूकी। सैकड़ों वर्ष की संस्कृति, ज्ञान और सभ्यता का भण्डार उन असभ्य और बर्बर लोगों के हाथों धूल में मिल गया। उस वक़्त अगर इस्लाम ने अपने सदाचरण द्वारा तातारियों को जीत न लिया होता और उनके दिलों को न बदल दिया होता तो मुसलमान समाज की विनाशता में बाक़ी क्या रह गया था ?

दूर न जाइये। फ्रांस को यूरोप के पहले और दूसरे महायुद्ध में अपने भोग–विलास और अपनी नैतिक कमज़ोरियां के कारण ही परास्त होना पड़ा था। अगर मित्र राष्ट्र उसको सहारा न देते तो यह जाति, जिसने अपनी बुद्धि और वीरता की धाक जमा दी थी और नेपोलियन जैसा वीर योद्धा और महान नेता पैदा किया

www.abulhasanalinadwi.org

था, खत्म हो चुकी थी। इसी तरह मसोलिनी की योग्यता और नाज़ियों की सहायता, इटली के खोखले समाज के पाँव न जमा सकी।

हमारा हिन्दुस्तानी समाज पुराने ज़माने में अपनी विद्या और ज्ञान, दर्शन और वेदान्त, साहित्य और कविता में मशहूर था। उसकी सच्चाई और ईमानदारी, न्याय और नीति का सब लोहा मानते थे। उसके सदाचरण की कहानियाँ और उसके ऊँचे सिद्धान्तों के गीत देश–देश में गाये जाते और शुहरत पाते थे। पाँचवी शताब्दी ई० में ईरान जैसे देश ने, जो उस वक़्त विद्या और सभ्यता का केन्द्र था, हमारे देश भारत में बहुत बड़ा विद्वान भेजा कि वह यहाँ की आध्यात्मिक शिक्षा और नैतिक कहानियों का ईरानी भाषा में अनुवाद करे। अरबों ने भी अपने ज़माने में इन कहानियों की आवभगत की। आज भी उनका अनुवाद "कलीला व दिम्ना" नामक एक प्रसिद्ध पुस्तक के रूप में मौजूद है। चीनियों ने अपनी सर्वमान्य बुद्धिमत्ता और ज्ञान के बावजुद इस मुल्क के इल्म और हिकमत के ख़ज़ानों से बराबर फायदा उठाया और अपने बड़े–बड़े दार्शनिक और धार्मिक विद्वानों को भेज–भेजकर इस देश की उस्तादी और बड़ाई को माना। आज भी उसकी प्राचीन कथाओं और गीता और रामायण में बड़ी–बड़ी सच्ची और गहरी बातें हैं।

www.abulhasanalinadwi.org

दसवीं शताब्दी ईसवीं में यह हिन्दुस्तानी समाज बहुत गिर चुका था। खुदग़र्ज और निजी दुश्मनियो का सारे देश में जाल–सा फैला हुआ था। ईश्वर और आध्यात्मिक शक्ति बहुत कम बाक़ी रह गई थी। दौनत अर्थात् लक्ष्मी ने दानव रूप धारण कर लिया था। धर्म और साहित्य, चित्रकला और कारीगरी यहाँ तक कि उपासनागृहों तक में आचरण की गिरावट अपने नंगे रूप में नज़र आती थी। समाज के भीतर ऊँच–नीच की ख़राबी बुरी तरह से घुस गई थी। कुलीन और अकुलीन ब्राह्मण और शूद्र में इन्सान और जानवर से ज़्यादा फर्क था। नैतिक बल जाता रहा था। यही वह हालत थी जिसमें मध्य एशिया से एक ताजा दम क़ौम आई जिसमें नैतिक बल की कमी नहीं थी। यह मुसलमान थे, जिन्होंने इस मुल्क का प्रबन्ध अपने हाथों में ले लिया। उन्होंने हिन्दुस्तानी समाज का तरक़्क़ी दी और डा० पट्टाभि के शब्दों में "यहाँ की संस्कृति को लाभ पहुँचाया और इस देश की समाजी ज़िन्दगी और उसके साहित्य को गहराई के साथ प्रभावित किया"। उन्होंने इसकी रगों में नया और ताजा ख़ून पहुँचाया। मानव–समानता का पाठ पढ़ाया, आध्यात्मिक तथा अविभौतिक बातों में एक माध्यम अवस्था पैदा कर दी। ईश्वर की विशुद्ध एकता और यहाँ के अदब (साहित्य) मे सच्चाई, ईमानदारी, अख़लाक़, बहादुरी और

www.abulhasanalinadwi.org

ईश्वर भक्ति के ऊँचे और उत्तम आदर्श शामिल किये। परमेश्वर से डरने वाले और पवित्र जीवन बिताने वाले राजा, सच बोलने और नेक साह देने वाले मंत्री, मौत से निर्भय होकर बड़े–बड़े सम्राटों को टोक देने वाले साधुसंत और सांसारिक लालसाओं से विरक्त रहने वाले विद्वान पैदा किये, जिनकी ज़िन्दगी इस मुल्क का एक क़ीमती ख़ज़ाना है। दूसरे देश का इतिहास आसानी से ऐसे ऊँचें आदर्श प्रस्तुत नहीं कर सकता। उन्होंने कई बार इस देश की गिरती हुई अख़लाक़ी ताक़त को उभारा और समाज के रोगी शरीर को शक्ति और स्वास्थ्य प्रदान किया और देश को नैतिक पतन से बचा लिया।

मगर धीरे–धीरे हिन्दुस्तानी समाज तरह–तरह की ख़राबियों में फंसता चला गया। उसमें भोग, विलास, स्वार्थ और धोखेबाजी की बुराइयाँ पैदा हो गयीं। जिन मुसलमानों ने किसी समय में हिन्दुस्तानी समाज का सुधार किया था वही इसके इस बिगाड़ के भी ज़िम्मेदार ठहराये जा सकते हैं। घरेलू लड़ाइयों, अनुचित तरफदारी, धोक़ेबाज़ी और वादाख़िलाफ़ी चारों तरफ़ फैल गयी थी। नतीजा यह निकला कि मुल्क का प्रबन्ध ख़राब हो गया। शहरों में इत्मीनान और रास्तों में शान्ति नहीं रही। देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक गड़बड़ी फैल गयी।

www.abulhasanalinadwi.org

परमेश्वर को किसी से नातेदारी तो नहीं है। वह अपनी ज़मीन की तबाही और लोगों की बर्बादी देख नहीं सकता। यहाँ इस देश में किसी में राज्य करने की योग्यता नहीं थी। तब उसने सात समुद्र पार से एक जाति को भेज दिया उसमें राज्य करने की योग्यता थी और ज़िन्दा रहने का स्वभाव भी था। सदाचरण में तो यह बहुत पीछे थी मगर उसके पास ज़िन्दगी के कुछ ऐसे सिद्धान्त ज़रूर थे जिनके बल पर वह किसी देश पर कुछ समय के लिये राज्य कर सकती थी।

इस देश को अपने आधिपत्य में लेने के बाद इस जाति ने सड़कें बनायीं, डाकख़ानें, तारघर और अस्पताल खोले, रेलें चलाईं, पुलिस का अच्छा प्रबन्ध किया, सरकारी कार्य को ठीक–ठीक चलाने के लिये व्यवस्था कायम की। यह सब कुछ किया मगर हिन्दुस्तानी समाज को भारी हानि पहूँचायी। उसके बचे–खुचे उत्तम गुण, भारतीय संस्कृति और प्राचीन सभ्यता को मिटा डाला और ऐसी नई–नई ख़राबियाँ पैदा कर दीं जो उस सरकार के राज्य में होना ही चाहिए, जिसको रूमी राज्य से "फूट डालो और राज्य करो" का नियम पैतृक सम्पत्ति के रूप में मिला था। एक जाति की दूसरी जाति से दुश्मनी, दफ़्तरी काटफांस, अपने थोड़े से फ़ायदे के लिये दूसरों को बड़ी से बड़ी हानि पहुँचा देना, भीतरी षड़यंत्र, धर्म और न्याय

www.abulhasanalinadwi.org

तथा सदाचरण और नीति की परवाह न करके अपने लिए या अपने सम्प्रदाय के लिए या अपनी बिरादरी के लिए या अपने मित्रों और नातेदारों के लिए अनुचित को उचित ठहरा लेना। यह वह सबक़ थे जो हिन्दुस्तानी कर्मचारियों और नौकरी–पेशा लोगों ने अंग्रेजी राज्य के समय में सीखे। अंग्रेजों के सौ वर्ष के राज्य में हिन्दुस्तानियों ने जिस कारीगरी में ख़ूब मश्क की वह किसी उद्देश्य या लाभ के लिये दफ़्तरी और क़ानूनी योग्यता से काम लेना और महीनों बल्कि वर्षों में धीरे–धीरे क़ानूनी तौर पर अपने उद्देश्य को प्राप्त करना था।

ईर्ष्या, द्वैष और पक्षपात की आग, जो दफ़्तरों और शिक्षालयों में अन्दर ही अन्दर अपना काम करती रही उसने हिन्दू और मुसलमान अफ़सरों और मातहतों के दिलामें में एक दूसरे से घृणा और शत्रुता का ऐसा बीज बोया कि अंत में एक दूसरे के साथ रहना कठिन हो गया। इस तरह जो मानसिक कुप्रवृत्ति पैदा हुई वही उन घटनाओं की ज़िम्मेदारी है जो इस अभागे देश में पिछले दिनों घटी। उनमें न तो संस्कृति और सभ्यता की मित्रता का हाथ था और न भाषा और रीति–रिवाज का भेद ही अपना प्रभाव रखता था। जो लोग संस्कृति और सभ्यता के इख़्तिलाफ को इन बर्बरतापूर्ण झगड़ों के लिये उत्तरदायी ठहराते हैं वह असलियत से आँखे बन्द कर लेते हैं और

www.abulhasanalinadwi.org

जान–बूझकर ग़लत बात मुंह से निकालते हैं। भाषा और साहित्य, सभ्यता और संस्कृति का भेद इस देश में सदा से चला आ रहा है। मगर अंग्रेजी राज्य और उसके शिक्षालयों द्वारा वह दुश्मनी और फूट कभी पैदा नहीं हुई थी जो फोड़ा बन कर सन् 1947 ई0 में फूट पड़ी।

बीसवीं शताब्दी के शुरू में विदेशी राज्य के नुकसान और तकलीफें पूरी तरह लोगों पर खुल गई। मगर शरीर सम्बन्धी तकलीफों को ज़्यादा अनुभव किया गया और आचरण ख़राबियों को कम अनुभव किया गया। हिन्दू मुसलमानों के मेलजोल से आज़ादी का आन्दोलन उठ खड़ा हुआ। उस वक्त इस मुल्क की समाजी और अख़्लाकी हालत बहुत गिर चुकी थी। लोगों ने आचरण की अच्छाइयों को भुला रखा था। अपना मतलब और अपना फ़ायदा लोगों के दिलामें और दिमागों पर छाये हुये थे। अंग्रेजों की राजनीति और अंग्रेजी शिक्षा, कीडों की तरह समाज के हरे–भरे दरख्त को चाट चुकी थी। मानवता और नागरिकता का विचार जिस पर संस्कृति की इमारत खडी की जाती है बहुत कमज़ोर पड चुकी थी। जरूरत इस बात की थी कि देश के आचरण को ऊँचा उठाया जाता और जनता में मानवता और नागरिकता के भाव और विचार पैदा किये जाते। इसके लिये मुहल्ले–मुहल्ले, गॉव–गॉव, नगर–नगर में कमेटियॉं, सभाएँ, पंचायतें और

www.abulhasanalinadwi.org

मदरसे खोले जाते। घर–घर इसके उपदेश दिये जाते। लाखों पुस्तकें और पुस्तिकाऐं प्रकाशित की जातीं और लोगों को पढ़कर सुनाई जाती। सारांश यह कि आजादी का भाव पैदा करने के लिये जो आचरण सँभालने और मानवता पैदा करनी चाहिए थी।

मगर अंग्रेज़ों के यहाँ मौजूद रहने और उनके राजनीतिक हथकण्डों ने जो सदैव आचरण और मानवता की उपेक्षा करते रहे, हमारे नेताओं को इसका मौका ही नहीं दिया कि वे समाज के आचरण सुधारते। इसमें शक नहीं कि हमारे नेताओं का आचरण सदा ऊँचा रहा। मगर गाँधी जी के सिवा किसी ने जनता के आचरण ऊँचे करने की तरफ़ ध्यान बहुत ही कम दिया। राजनीति की सामयिक जटिल समस्याओं ने गाँधी जी को भी इधर पूरा समय देने का मौका नहीं दिया।

सच बात यह है कि समाज का सुधार और निर्माण तो पैगम्बरों और ऋषियों–मुनियों का काम है। वे अपना सारा ध्यान और ईश्वर की दी हुई सारी ताकतें इसी काम पर लगा देते हैं। वे समाज से अनहोनी उम्मीदें नहीं लगाते और उस पर इतना बोझ नहीं डालते जो उनसे उठाया न जा सके। वे पहले ईमान और विश्वास पैदा करते हैं। फिर उसके आचार–विचार सुधारते हैं अपने

www.abulhasanalinadwi.org

मन और अपने फ़ायदों के ख़िलाफ़ काम करने की ताक़त पैदा करते हैं, जैसे बेरोग फलदार पेड़ों से फल पैदा होते हैं और जैसे आग के साथ गर्मी और सूरज के साथ प्रकाश का होना ज़रूरी है, वैसे ही कर्मों के भी फल होते हैं। मनुष्य के स्वभाव का सदा यही रास्ता रहा और यही रहेगा।

सन् 1947 में जब इस देश को आज़ादी मिली तो गिरे हुए आचरण, मानवता की कमी, व्यक्तिगत और जातीय पक्षपात ने लोगों को ऐसा पागल बना दिया कि मनुष्य ही मनुष्यों के लिये, शेर भेड़ियों और सांप बिच्छुओं के समान बन गये और उन्होंने ऐसे बर्बरता पूर्ण काम किये जिनसे राक्षस भी सिर झुका लें और कानों पर हाथ रखें। असहाय स्त्रियों को बे–आबरू किया गया। दूध पीते बच्चों को संगीनों और भालों से मारा गया, यात्रियों को चलती हुई रेल से फेंका गया। कुँओं में विष डाला गया। जलती चिता में जीते जागते लोगों को बिठा कर जला दिया गया। एक ऐसा देश जिसका आचरण इतना गिर गया हो, जिसके रहने वाले अधिकांश लोग मानवता से इतने गिर गये हों, उस देश के सामाजिक और नैतिक सुधार से बढ़कर और किस काम को महत्व दिया जा सकता है।

www.abulhasanalinadwi.org

फिर जब इस मुल्क के दोनों हिस्सों को राज्य मिल गया तो अधुरी शिक्षा–दीक्षा और अंग्रेजों के ढाले हुए आचरण ने यहाँ भी गुल खिलाया। घूस–खोरी और सामाजिक लूट–खसोट का बाज़ार खुल गया। कन्ट्रोल नहीं था तो भाव इतने चढ़ गये कि गरीबों को जीवन बिताना मुश्किल हो गया। कन्ट्रोल कायम हुआ तो चोर–बाज़ारी और अनुचित नफ़ाख़ोरी ने सिर निकाला। एक तरफ मुद्रास्फीति (INFLATION) ने देश की आर्थिक दशा ख़राब कर दी। दूसरी ओर बढ़ी हुई ग़रीबी ने लोगों को कठिनाइयों में डाल दिया। इन ग़रिबों को देश की आज़ादी और अपनी सरकार का अभी तक कोई लाभ नहीं पहुँचा।

ऐसी अवस्था में देश की सबसे बड़ी ज़रूरत नैतिक और सामाजिक सुधार और जनता में ज़िम्मेदारी का भाव पैदा करना है। सभी नेताओं और देश की भलाई चाहने वालों को सबसे पहले इसी समस्या को सुलझाना चाहिए। इस समय इस विषय को छोड़कर दूसरे मामलों में पड़ जाना और किसी फ़र्ज़ी सबब को देश की ख़राबियों का असली सबब ठहरा लेना भारी भूल होगी, जिसे देश का इतिहासकार क्षमा नहीं करेगा। जिस देश में मानव जीवन की प्रमुख बातों के प्रचार की आवश्यकता हो और लोगों को यह बताना हो कि सदाचरण की क्य महत्ता है, जहाँ

www.abulhasanalinadwi.org

बढी हुई रिश्वत फैली हुई चोर–बाजारी और हद से ज्यादा नफाखोरी के कारण लोगों के प्राणों पर बन रही हो, जहाँ अख्लाकी और कानूनी अपराध बढ़ते जा रहे हों, वहाँ इन सब चौंका देने वाली बातों से आखें बन्द करके सिर्फ "एक सभ्यता और एक भाषा" की रट लगाये जाना और इसी को हर बीमारी की दवा समझना और उसी पर सारा जोर लगाना न तो बुद्धिमानी है और न देश के साथ न्याय।

हिन्दुस्तानी समाज का संकट

इस वक्त हिन्दुस्तानी समाज संकट में है। इसको वह कीडा लग गया है, जो भीतर ही भीतर उसे खोखला करके रख देगा। फिर इस राज्य को भी संकट ही में समझिए। जब कोई समाज बाहरी तौर पर दिवालिया और भीतरी तौर पर खोखला हो जाये तो उसको न तो कोई हुकूमत बचा सकती है और न तो कोई जनतांत्रिक व्यवस्था ही उसकी हिफाज़त कर सकती है और न एक भाषा और न सभ्यता द्वारा ही उसकी रक्षा हो सकती है। जिस वक्त रोमन इम्पायर का खात्मा हुआ है उस वक्त उसके साम्राज्य भर में एक कल्चर था और एक ही भाषा थी।

www.abulhasanalinadwi.org

यही हाल ईरान और अब्बासी ख़िलाफत और ख़्वार्जमशाही राज्य को समय में था। मगर इनमें से कोई चीज़ उनकी हिफ़ाज़त न कर सकी।

श्री मावलंकर ने इसी संकट को दृष्टिगत रखते हुए सूरत की एक सार्वजनिक सभा में कहा था कि "हमें आचरण की रूप--रेखा बनाना चाहिये और हमारे सब कामों को सच्चाई पर आधारित होना चाहिये। अगर हम इस काम को न कर सके तो हिन्दुस्तान का वर्तमान समाज देर या सबेर ख़त्म हो जाएगा और हम भी उसके साथ तबाह हो जायेंगे। हमें सच्चाई को हर चीज़ का आधार बनाना चाहिये।" भारत सरकार के शिक्षा विभाग के सलाहकार डा0 ताराचन्द ने भी आगरा विश्वविद्यालय के वार्षिक अधिवेशन में इसी सच्चाई की तरफ़ ध्यान दिलाया और कहा कि "जनता का राज्य उसी समय पनप सकता है जब समाज का हर एक आदमी अच्छे गुणों का मालिक हो।"

भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री पं0 जवाहर लाल नेहरू ने 16 दिसम्बर 1948 को जयपुर कांग्रेस की विषय निर्धारण कमेटी में भी बड़ी सफ़ाई और साहस के साथ इसी संकट की ओर ध्यान दिलाया था। आपने कहा – "यह बड़े अफ़सोस की बात है कि बहुत से लोग असली

www.abulhasanalinadwi.org

और मौलिक बातों को छोड़कर साधारंण बातों में उलझ गये हैं, जिनका कोई ख़ास प्रभाव हमारे मुल्क की ज़िन्दगी पर नहीं पड़ता..... मुझे किसी बाहरी दुश्मन का ज़रा भी डर नहीं है, डर जो कुछ है सो अपने ही उन लोगों से है जो अपनी संकीर्णता से देश की कमज़ोरी का कारण बन रहे हैं।''

हमारा महान हिन्दुस्तान

हिन्दुस्तान के इस महान की रक्षा नई सरकार को स्थायी रूप से बनाये रखने और देश की भलाई और उसके प्रेम की मांग यह है कि हम यहाँ के सामाजिक, और नैतिक सुद्दार के मामले पर एक सच्चे आदमी की तरह निष्पक्ष भाव से विचार करें। इतना बड़ा समाज और इतना बड़ा देश लिस पर इस वक़्त संसार भर की निगाहें लगी हुई हैं और जो एशिया का नेता बनने का अधिकारी है, जो संसार की दूसरी जातियों के बीच पंच बन कर रह सकता है, जो बहुत से देशों का पेट भर कर भी अपना पेट भर सकता है, जो योग्य व्यक्तियों और धन, दौलत की निधि है, वह अगर छोटी–छोटी बातों और निचले दर्जे के पक्षपात से नष्ट हो गया तो इससे बढ़कर त्रासदी संसार के लिये और क्या हो सकती है ?

www.abulhasanalinadwi.org

वर्तमान नैतिक कमज़ोरियाँ और समाजी ख़राबियाँ उस वक़्त तक दूर नहीं हो सकतीं, जब तक समाज की भीतरी परिवर्तन न हो। जब तक आचरण नहीं सुधरेंगे, तब तक लोग उन मुसीबतों से छुटकारा नही पा सकते, जो बदअख़्लाकियों और समाजी कमज़ोरियों की पैदावार है। यह ख़राबियां न तो क़ानून से दूर हो सकती हैं, न पुलिस और अदालतों से। न तो नये–नये कमीशन उनका द्वारा बन्द कर सकते हैं, न सुधार कमेटियां उनका रास्ता रोक सकती हैं। किसी ऐसे आदमी को सच्चाई और क़ानून के विरोध से रोका नहीं जा सकता ? जिसके दिल में बेईमानी भरी हुई हो और जो सरकारी क़ानून और अपनी ही जैसी शक्तियाँ रखने वाले मनुष्यों से ऊपर एक महानतम और उच्चतर शक्ति का विश्वास और भय न रखता हो। शिक्षा चाहे कितनी ही ऊँची हो अगर वह सच्चाई और ईमानदारी से ख़ाली है तो वह ऐसी ही है जैसे उद्योग–धन्धे और कारोबार। उसका कोई प्रभाव आचार–विचार पर नहीं पड़ सकता। घूसखोरी, चोरबाज़ारी, नफ़ाख़ोरी, नाजायज़ तरफ़दारी, धोखा और चालबाज़ी ये सारी बुराइयाँ बहुधा पढ़े–लिखे लोगों में ही देखी जाती हैं।

यूरोप में चूकि ज़िन्दगी का सगठन अच्छा और नागरिकता का भाव बढ़ा हुआ है, इसलिए यूरोपियन समाज के लोग घटिया दर्जे की नैतिक गिरावटों की

www.abulhasanalinadwi.org

बातों से बचते रहते हैं और ऊँचे दर्जे की बुराइयों और फैशन में छिपे हुए दुराचारों को उचित ठहरा लेते हैं। वह व्यक्तियों की जगह जातियों और देशों के मामले में अन्याय से काम लेते रहते हैं। चुनाव जीतने के लिये बड़ी–बड़ी पार्टियों को रिश्वतें देते हैं। कौमों को लड़ाकर और मुल्कों को तबाह करके अपने व्यापार की मण्डी गर्म करते रहते है। अगर मौका होता है तो अणुबम फेंकने और हरे–भरे नगरों को नष्ट–भ्रष्ट कर देने से भी नहीं चूकते। उनको किसी व्यक्ति से वादा करके पूरा न करना बहुत खलता है, मगर कौमों और मुल्कों से बड़े–बड़े समझौते करके आसानी से तोड़ देते हैं। अगर आत्मविहीन और अन्तःकरण से रहित शिक्षा किसी कौम और मुल्क की अख़्लाक़ी हालत को ऊँचा कर सकती तो इस वक़्त यूरोप और अमेरिका जैसे देश व्यक्तिगत और सामूहिक सदाचरण के मामले में आदर्श समझे जाते।

आन्तरिक परिवर्तन के लिए संसार के पूरे इतिहास में "ईमान" अर्थात् "विश्वास" से बढ़कर कोई दूसरी ताक़त न मिलेगी। जब तक जन–साधरण का परमेश्वर से दृढ़ विश्वास नहीं होगा और जब तक परमेश्वर क़ा भय और उसकी पूछताछ और कर्मों के फल का खटका नहीं होगा तब तक सदाचरण और मानवता की पैदावर नहीं हो सकती।

www.abulhasanalinadwi.org

इस ईमान और इस दृढ़ विश्वास ने, मानसिक व नैतिक तब्दीली और जीवन के परिवर्तन के ऐसे अद्भुत नमूने प्रस्तुत किये हैं, जिनके उदाहरण सम्पूर्ण मानव इतिहास में नहीं मिल सकते। यही वह ताक़त थी, जिसने छठी शताब्दी ईस्वी में अरबों के कट्टर और जिद्दी कौम की देखते–देखते कायापलट कर दी। उनकी शताब्दियों की पड़ी हुई बुरी आदतें छुटा दीं। पशुता और दानवता की उस नीची जगह से उठाकर जहाँ वह अपने हाथों से अपनी मासूम कन्याओं को ज़िन्दा गाड़ देते थे, मानवता की उस ऊँची जगह पर पहुँचा दिया जहाँ वह अनाथ बालिकाओं का लालन–पालन करने में एक दूसरे से आगे निकल जाना चाहते थे। आचरण की यही वह उत्कृष्टता थी कि एक अपराधिनी पैग़म्बर स० की अदालत में आकर स्वंय अपने पाप का इक़रार करती है। फिर जब उसको बिना किसी ज़मानत और मुचलके के लौटा दिया जाता है तो अपने पाप के बालक को गोद में लेकर आती है और दण्ड की इस प्रकार इच्छा करती है जैसे कोई मुक्ति और छुटकारे की इच्छा करे। उसको फिर लौटाया जाता है कि बालक दूध छोड़ दे और भोजन करने लगे। दिल की फांस उसको फिर अदालत में लाकर खड़ा कर देती है और उससे कहलवाती है "या रसूलल्लाह ! (हे ईश्वर के सन्देश–दाता) मुझे दण्ड दीजिये कि मेरे पाप

www.abulhasanalinadwi.org

का प्रायश्चित हो जाये। मैं ईश्वर के दण्ड की हिम्मत नहीं रखती' यही वह ताक़त थी कि ईरान के युद्ध में एक ग़रीब मुसलमान सिपाही लाखों रूपये का हीरे–जवाहरात का जड़ाऊ सामान कुर्ते के दामन में छुपाकर लाता है और अफ़सर के हवाले कर देता है कि यह ईश्वर का धन है। जब उससे उसका नाम पूछा जाता है तो अपना नाम नहीं बताता और कहता है कि "मुझे नाम और प्रशंसा की ज़रूरत नहीं, जिसकी ख़ुशी के लिए मैंने यह किया है वह मेरा नाम जानता है!" यही ताक़त थी कि मदीने के मुसलमान शराब का प्याला मुंह से लगाये हुए थे कि कानों में आवाज़ आयी "शराब हराम हो गयी" यह आज्ञा सुनते ही प्याला तुरन्त मुंह से हटा दिया जाता है। मुंह की शराब उगल दी जाती है। मटके और बरतन फोड़ दिये जाते हैं और मदीने की नालियों में शराब बहती दिखाई देती है।

इसके मुक़ाबिले अमेरिका जैसा सभ्य सुसंगठित और विकसित देश कई करोड़ डालर खर्च करके और कई अरब पृष्ठ प्रकाशित करके भी अमेरिकन समाज को शराब छोड़ने पर आमादा न कर सका, बल्कि उसने इस बारे में जितना प्रचार किया लोगों में शराब पीने का शौक उतना ही अधिक बढ़ता गया। यहाँ तक कि उसके रोकने के लिए तो क़ानून बनाया गया था उसे समाप्त

www.abulhasanalinadwi.org

कर दिया गया। हमारा देश भी अपने सभी साधनों और उपायों को काम में लाने के बाद घूँसख़ोरी और चोर बाज़ारी को अब तक रोक नहीं सका। अब वक़्त आ गया है कि एक असफल उपाय को बार–बार दुहराने और समाज को और ज़्यादा बिगाड़ने का अवसर देने की जगह एक सफल रास्ता इख़्तियार किया जाये और धर्म की इस ताक़त से सहायता लेने में संकोच और शर्म से काम न लिया जाये। हमारे नेता और देश के कर्ताधर्ता महानुभावों को चाहिये कि इस ताक़त को देश के निर्माण का आधार बनायें और अपने सम्पूर्ण साधनों और शक्तियों को ऐसे उपदेशों और ऐसी शिक्षा के प्रचार में लगायें जो लोगों में ईश्वर का अटूट विश्वास और भय और उसके आगे उत्तरदायित्व का विचार पैदा करे। इस देश की भलाई और तरक़्क़ी और हिन्दुस्तानी समाज की रक्षा और नेक़नामी के लिये यह काम इन बातों से हज़ार गुना महत्व रखता है कि किसी प्राचीन भाषा या साहित्य या नृत्यकला या गायन विद्या को जीवित किया जाये और नये–नये विभाग खोले जायें और पाश्चात्य देशों के काँधे से काँधा मिला कर चला जाये। विदेशी सरकार के होने और राजनीति में उलझे रहने के कारण हमारा प्रेस और हमारे नेता नैतिक और सामाजिक सुधार की तरफ़ ध्यान नहीं दे सके। इसलिये हमारी ज़िन्दगी में बहुत सी

www.abulhasanalinadwi.org

त्रुटियाँ पैदा हो गयीं। मगर अब जबकि हम पर हिन्दुस्तानी समाज के सुधार और देश की रक्षा का भार आ पड़ा है और इस मार्ग में कोई राजनीतिक बाधा बाकी नहीं रही है, हमारा प्रेस, साहित्य, रेडियो और राष्ट्रीय नेताओं को इसकी ओर पूरा ध्यान देना चाहिए।

अगर हमने देश की उन्नति और संगठन के साथ समाज की अख्लाकी तरक्की का काम मिला दिया और और उसको नये जीवन का आधार बनाया तो यह संसार के इतिहास में ऐसा शानदार तजुर्बा होगा कि केवल एशिया के स्वतन्त्र देश ही नहीं, बल्कि यूरोप और अमेरिका भी हमारे देश और हमारे समाज का अनुसरण करेंगे और अगर हमने यूरोप और अमेरिका के पग–चिन्हों पर ही चलने को पर्याप्त समझा तो हमारी हैसियत एक कुन्दजिहन शागिर्द से अधिक न होगी, जो स्वयं अपने दिमाग से सोचने–समझने और अपना रास्ता निकालने में असमर्थ होता है और यह बात हमारे महान देश और महान समाज के लिये किसी तरह गौरव की बात नहीं हो सकती।

www.abulhasanalinadwi.org